बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-75 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अक्तूबर 2018 | मूल्य - 5 रूपए

खतरनाक उद्योगों में छोटे बच्चे कर रहे है काम , कौन करेगा सुनवाई ?

नन्हे बातूनी रिपोर्टर का खुलासा

बातूनी रिपोर्टर: रूस्तम, रिपोर्टर: ज्योति

भ्रमण के दौरान बालकनामा के बातूनी रिपोर्टर रूस्तम ने यह जानकारी इक्ट्ठी की कि हमारे देश में अभी भी न जाने कितने नन्हें मासूम बच्चे बाल मजदूरी करने को मजबूर हैं। वे ऐसे-ऐसे खतरनाक कामों में लिप्त हैं, जिन्हें करने से बड़े-बड़े लोगों के हाथ कांप उठते हैं। इन सभी बच्चों की उम्र तकरीबन 10 से लेकर 17 साल तक ही होगी। बाल मजदूरी की सच्ची तस्वीर समाज के सामने रखने के लिए रूस्तम कुछ ऐसी बस्ती तथा ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां कबाड़ा बीनते हुए, मलवा छांटते हुए व घरों से कूड़ा-कबाड़ा उठाते हुए नजर आए, स्टेशनों पर तथा फुटपाथों पर काम करते हुए नजर आए। हैरानी वाली बात यह सामने आयी कि जो बच्चे रेलवे स्टेशन पर रहते हैं, उन बच्चों को पुलिस आयेदिन परेशान करती है। पुलिस से छुटकारा पाने के लिए बच्चे सुबह 3 से 5 बजे तक काफी अंधेरे में ही बोतल उठाने के लिए जाते हैं।

स्टेशन पर काम करने वाले बच्चों ने अपनी पीढ़ा बताते हुए कहा कि पुलिस के डर से हम सही प्रकार से सो भी नहीं पाते हैं; क्योंकि हमारे पास रहने के लिए घर नहीं है। इसलिए हम स्टेशन के आस-पास ही सोते हैं, लेकिन दुख की बात यह है कि हम बच्चे समय पर सो नहीं पाते हैं क्योंकि पुलिस वाले भईया रात 11 बजे तक स्टेशन पर घूमते रहते हैं।

दूसरी तरफ रूस्तम ने देखा कि कुछ बच्चे ऐसे है, जो बस्ती में रहने के बाद भी कड़ी मेहनत करते हैं। उस बस्ती में रहने वाले सभी परिवार घरों से कूड़ा-कबाड़ा उठाने के कार्य करते हैं। उस बस्ती में रूस्तम का एक मित्र भी इस कार्य में शामिल है। जब रूस्तम अपने दोस्त से मुलाकात करने के लिए उस बस्ती में पहुंचा तो उसे पता चला कि उसके दोस्त और अन्य बच्चे किस पीढ़ा में कार्य करते हैं। रूस्तम के दोस्त का कहना है कि हमें यह काम करना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है लेकिन हम कर भी क्या सकते हैं? यह हमारी मजबूरी है। जैसे घर में माता-पिता के अलावा बड़ा भाई भी है, जो गांव चले गए हैं, जिसकी वजह से मुझे अपने माता-पिता के साथ कूड़ा-कबाड़ा उठाने के लिए जाना पड़ता है। बच्चों का कहना है कि जब हम बच्चे घरों से कूड़ा-कचरा उठाने के लिए जाते हैं, तो हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है। क्योंकि हम बच्चों को दूसरी-तीसरी मंजिल से कूड़ा उठाना पड़ता है। जब हम बच्चे दूसरी-तीसरी मंजिल से कूड़ा-कबाड़ा उठाने के लिए जाते हैं, तो कभी-कभी सीढ़ियों पर कूड़ा बिखर जाता है, तो घर के मालिक गाली देने लगते हैं और उन्हीं बच्चों को कूड़ा कचरा साफ सफाई करने को बोलता है। अगर बच्चे साफ-सफाई से इन्कार करते हैं, तो बच्चे को मारने के लिए भी दौड़ते हैं। इतनी कठिनाईयों से जूझने के बाद भी बच्चे अपने घर लौटने पर उस कूड़े-कचरे की छंटाई-बिनाई करते हैं, जिसकी वजह से बच्चों की अंगुलियों में नुकीले पदार्थ चूभ जाते हैं, इस कारण बच्चों की अंगुलियों में कीटाणु पनपने की संभावना रहता है। बच्चों ने बताया कि इस कार्य को करते समय काफी बदबू भी आती है लेकिन मजबूरन हम बच्चों को यह कार्य करना पड़ता है।

इसी तरह जब रूस्तम दूसरी बस्ती के पास छानबीन करने पहुंचा तो पता चला कि उस स्थान पर कूड़ा का एक बहुत बड़ा हव है, जहां काफी सारे बच्चे कूड़ा-कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं। उस बस्ती में रहने वाले बच्चों का कहना है कि हमारी बस्ती के चारों तरफ गंदगी व प्रदुषण का बोलवाला है। उस बस्ती में बाहर से ट्रक आता है और उस ट्रक पर काफी मलवा लदा होता है। जब उस ट्रक द्वारा मलवा को बस्ती के बाहर फेंका जाता है, तो बहुत सारी धूल-मिट्टी उड़ती है। उस धूल मिट्टी की ओर बच्चे तथा बस्ती में रहने वाले लोग दौड़ पड़ते हैं और उड़ती उस धूल-मिट्टी में ही मलवा छांटने लगते हैं। बच्चों का कहना है कि हम ट्रक आते ही इसलिए दौड़ जाते हैं, क्योंकि इस बस्ती में रहने वाले लोगों की जनसंख्या बहुत अधिक है और ज्यादातर लोग इसी प्रकार के कार्य करते हैं। हम बच्चे धूल-मिट्टी का सामना करते हुए इस काम को कर रहे हैं। अगर हम बच्चे यह काम नहीं करेंगे, तो हमारे परिवार का गुजारा करने में बहुत कठिनाई आ सकती है। इसी तरह चर्चा करते हुए रूस्तम ने खुद देखा कि बच्चे किस प्रकार ट्रक द्वारा गिराए हुए मलवा में कार्य कर रहे थे और किन-किन परेशानियों से जूझ रहे थे। मलवा छांटते समय सभी बच्चे तथा माता-पिता के पूरे शरीर धूल मिट्टी से भर चुके थे। बच्चों का कहना था कि हम इस कार्य से संतुष्टि नहीं हैं; क्योंकि हम बच्चों को काफी प्रदुषण का सामना करना पड़ता है। काफी धूल मिट्टी उड़ने की वजह से कूड़ा-कबाड़ा की छंटाई-बिनाई करते समय कुछ भी दिखाई नहीं देता है, जिसकी वजह से हम बच्चों को भय रहता है कि कहीं किसी प्रकार की दुर्घटना का सामना ना करना पड़े।

बच्चों से बातचीत करते हुए रूस्तम ने इस बस्ती के दूसरी ओर देखा कि काफी धुआं आ रहा है। जैसे कोई पदार्थ जल रहा हो। जब रूस्तम उस धुआं की ओर पहुंचा, तो रूस्तम को देखने को मिला कि काफी सारा कूड़ा-कचरा था, जिसमें आग जल रही थी और जलते हुए विभिन्न पदार्थों में से भट भट की आवाज आ भी रही थी। उसी जलते हुए पदार्थों में से कुछ बच्चे चुंबक द्वारा कील व लोहा तथा अन्य सामान निकाल रहे थे। जब रूस्तम ने उन बच्चों से पूछा कि इस स्थान पर काफी बदबू आ रही है और काफी धुआं भी निकल रहा है, फिर भी आप बच्चे इस स्थान पर काम क्यों कर रहे हो ? बच्चों ने अपनी पीढ़ा बताते हुए कहा कि अगर हम यह काम नहीं करेंगे, तो हमारे परिवार का खर्चा नहीं चल पाएगा। हम बच्चे अपने घर का खर्चा चलाने के लिए इस तरह बाल मजदूरी से जूझ रहे हैं। जब हमारे पत्रकार ने रूस्तम से बातचीत की तो रूस्तम ने बताया कि हमारे देश में काफी बच्चे ऐसे हैं, जो बाल मजदूरी में लिप्त हैं। बच्चे दिन पर दिन बाल मजदूरी की ओर बढ़ रहे हैं लेकिन हमारी सरकार यह जानने की कोशिश ही नहीं कर रही है कि आखिर ऐसी क्या वजह है, जिसकी वजह से बच्चों को बाल मजदूरी की ओर बढना पड़.रहा है। रूस्तम का कहना है कि कोई भी बच्चा अपनी मर्जी से बाल मजदूरी की ओर नहीं बढ़ता है। उनकी कोई ना कोई पेरशानी होती है, तभी वह बाल मजदूरी की ओर बढ़ने के लिए मजबूर होता है। हम बच्चों की यही गुजारिश है कि सरकार सड़क एवं कामकाजी बच्चों की पीढ़ा को सुने-समझे और जो भी बच्चे बाल मजदूरी की ओर बढ़ रहे हैं, कृपया उनकी परेशानी का हल निकाले; ताकि बच्चों को बाल मजदूरी की ओर बढ़ने की जरूरत ही ना पड़े।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

संपादकीय

देश की राजधानी दिल्ली ही नहीं, बल्कि देश के लगभग सभी महानगरों, नगरों आदि में अति गरीबी और पारिवारिक संरक्षण, सुविधाओं से वंचित तथा उपेक्षित बच्चे सड़कों पर गुजर-बसर करने को मजबूर हैं। ये बच्चे शहर के प्रमुख स्थानों पर भीख मांगते, पन्नी बीनते, स्टेशन और चैराहों पर बोतल और कबाड़ा बीनते, ढ़ाबों पर काम करते हुए मिल जाएंगे। इनके परिवार भी इन्हीं कामों में लगे हैं, जो खुले में रात गुजारने को मजबूर हैं। अभावों, उपेक्षाओं और बेरोजगारी की वजह से तिरस्कृत जैसा जीवन जीने को मजबूर इन बच्चों के साथ स्कूल जाते समय होने वाली छेड़छाड़, काम के दौरान अत्याचार, नशेड़ियों के दुर्व्यवहार से त्रस्त बच्चे शिक्षकों तथा सामाजिक भेदभाव की वजह से शिक्षा से भी दूर होते जा रहे हैं और अपने आप को असुरक्षित भी महसूस करते हैं। मासूमों के साथ जिस तरह की घटनाएं हो रही हैं, उन्हें देखकर तो यही कहा जा सकता है कि मासूम स्कूलों में भी सुरक्षित नहीं हैं। गंदगी और बदबू ग्रस्त झुग्गी बस्तियों में स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं तो मानो गायब सी ही हैं। ऐसे में सड़क एवं कामकाजी बच्चों और वंचित समाज के पूर्ण विकास के बिना स्मार्ट सिटी की बात करना कोरी कल्पना ही साबित होगी।

टीम ''बालकनामा'' इन मासूमों की समस्याओं को समाज और सरकार तक पहुंचाने तथा इन्हें इनके अधिकारों को दिलाने के लिए दृढ़संकल्प है। इन बच्चों की समस्याओं और इनकी दशा से संबंधित जानकारी तथा सवालों से हर माह हम ''बालकनामा'' के माध्यम से सुधी पाठकों, संबंधित विभाग तथा अधिकारियों तक भी पहुंचाते रहते हैं। इन घटनाओं को पढ़-जान कर आपको भी इन मासूमों की चिंता सताने लगी होगी। आप अपने मन की बात, विचार, सुझाव पत्र, ईमेल के माध्यम से संपादकीय टीम तक पहुंचा सकते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि आपके सुझाव, सहयोग एवं मार्गदर्शन हमें यथावत मिलता रहेगा। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारी टीम पूरे जोश और गरमजोशी से अपने इस नेक काम में लगी रहेगी।

बालकनामा टीम

कामकाज करने वाली लड़कियों की यह अपील

सड़क पर लगें स्ट्रीट लाईट्स

बातूनी रिपोर्टर: रवि व रिपोर्टर: शम्भू

बालकनामा के पत्रकार ने बातूनी रिपोर्टर के साथ एक बैठक रखी। इस बैठक के दौरान सभी बातूनी रिपोर्टर ने अपनी बस्ती में हो रही समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। रिपोर्टर्स ने बताया कि हमारी बस्ती में रह रहे सभी माता-पिता और कुछ लड़कियां दूसरों के घरों में काम करने के लिए जाती हैं, तब जाकर हमारे परिवार का गुजारा हो पाता है; क्योंकि हमारी बस्ती में रह रहे सभी परिवार बहुत गरीब हैं। अगर वह दूसरे के घरों में कामकाज करने के लिए नहीं जाएगें, तो उनके घर का गुजारा नहीं हो पाएगा। लेकिन विचारणीय बात यह है कि इतनी कठिनाईयों का सामना करने के बाद भी यह लोग अपनी जिंदगी में खुश नहीं हैं ? जब यह राज जानने की इच्छा से पत्रकार उनसे बातचीत करने के लिए उनके पास पहुंचे तो उन्होंने बताया कि हम लड़कियां जिस रास्ते से काम करने के लिए जाते हैं, वह बहुत सुनसान है। हमें सुबह में काम पर जाते समय कोई परेशानी नहीं होती है लेकिन जब हम रात को आठ-नौ बजे अपने काम से लौटते हैं, उन रास्तों में काफी अंधेरा होता है। क्योंकि उन रास्तों में एक भी स्ट्रीट लाईट नहीं है। इस अंधेरे का फायदा नशा करने वाले कुछ व्यक्ति उठाते हैं। लड़कियों का कहना है कि जब रात को काफी अंधेरा हो जाता है, तो वह दुष्ट व्यक्ति इस अंधेरे का फायदा उठाकर, लड़कियों को अकेला देखकर अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हैं और कभी-कभी तो लड़कियों को रास्ते में ही रोक कर परेशान करते हैं, जिसकी वजह से कामकाज करने वाली सभी लड़कियां डरी हुई हैं। बेवश मासूम लड़कियां इस परेशानी से चाहकर भी छुटकारा नहीं पा रही हैं; क्योंकि अगर यह उस दुष्ट नशा करने वाले व्यक्ति के खिलाफ कोई कदम उठाएंगी, तो इन लड़कियों को ही इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा। इसी भय में लड़कियां कोई कदम नहीं उठाती हैं। एक रिपोर्टर ने बताया कि कुछ महीने पहले ही इसी तरह की एक घटना एक मासूम लड़की के साथ घट चुकी है, जिसकी वजह से वह लड़की वर्तमान में अपने राज्य बिहार वापस चली गई है। इस परेशानी से जूझ रही कामकाज करने वाली लड़कियां चाहती हैं कि सड़क पर स्ट्रीट लाईटें लगा दी जाएं, ताकि इस परेशानी से मुक्ति मिले। क्योंकि वह दुष्ट अंधेरेपन का फायदा उठाकर ही आक्रमण करते हैं। जब सड़क पर स्ट्रीट लाईट्स लग जायेंगी तो हमें उम्मीद है कि इस तरह की परेशानी बहुत कम सुनने को मिलेगी।

माता-पिता की अश्लील हरकतों से बच्चे हुए प्रभावित

बातूनी रिपोर्टर: रूस्तम व रिपोर्टर: शम्भू, दक्षिण दिल्ली

दक्षिण दिल्ली के सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बताया कि जिन रैन-बसेरों एवं पुल के नीचे वह रहते हैं, वहां उन्हें अच्छा नहीं लगता है। जब उनसे इस विषय पर बातचीत की गयी, तो उन्होंने बताया कि रात में जब वह सो जाते हैं, और आंधी रात में जब उन बच्चों की आंख खुलती है, तो वह अपने माता-पिता एवं आस-पास में रहने वाले लोगों को अश्लील हरकतें करते हुए देखते हैं, तो दिनभर बच्चों के दिमाग में वही चित्र आते रहते हैं। यह कहानी एक रात की नहीं, बल्कि हर रात की है। यही सब उनको देखने को मिलता है और सिर्फ रात में ही नहीं, बल्कि दिन में भी ऐसी हरकतें अक्सर बच्चे देखते रहते हैं। उन बच्चों का कहना है कि यह सब देखकर हमारे मन में भी ऐसे ही ख्याल आते रहते हैं, जिसकी वजह से हमारा पढ़ाई-लिखाई में मन नहीं लगता। स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता; और सोचते हैं कि काश हम यह सब कुछ करें। अक्सर देखा भी जाता है कि वह बच्चे लड़कियों के साथ छेड़खानी करते हैं और चुपके-चुपके लड़के एवं लड़कियां यह सब अश्लील हरकतें करते नजर आते हैं। यह सिर्फ बच्चों की बताई हुई घटना नहीं, बल्कि सामाजिक संस्था के कार्यकर्ता से भी यह जानकारी प्राप्त हुई है। उनका कहना है कि दिन में तो हम बच्चों को सेंटर में लेकर आ जाते हैं और उन सब हरकतों से उन्हें बचाना चाहते हैं, मगर रात को हम इन बच्चों को कैसे संभालें यह एक समस्या बन चुकी है। हम चाहते हैं कि पुल के नीचे एवं रैन-बसेरो में सरकार द्वारा जागरूकता फैलायी जाए, ताकि यह अश्लील हरकतें खुलेआम और बच्चों के सामने ना होकर कहीं बन्द गृह में ही हों। इसका असर मासूम बच्चों पर ना पड़े, ताकि बच्चे अपनी पढ़ाई-लिखाई और काम पर सही प्रकार से ध्यान दे सकें।

आप लोग हमें इस नजरिये से क्यों देखते हैं?

बातूनी रिपोर्टर: धोनी व रिपोर्टर: शम्भू, पूर्वी दिल्ली

अक्सर सड़कों, रेलवे स्टेशनों, बस अडडों पर आपने देखा होगा कि कुछ महिलाएं अपने छोटे-छोटे बच्चों को लेकर भीख मांगती हैं और उन्हें देख कर आपके मन में कई प्रकार के सवाल पनपते होंगे कि आखिर यह लोग अपने बच्चे को लेकर भीख क्यों मांगती हैं, या फिर आपके मन में कुछ इस तरह के सवाल उठते होंगे कि अरे इनका रोज का यही पेशा है। आपको शायद इनके परिवार वालों के बारे में सच्चाई नहीं पता। चलिये, इस खबर के दौरान हमें एक मौका मिला, इनके परिवार वालों की पीढ़ा को बयान करने का; आईए! इस विषय पर विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। कुछ दिन पहले जब हमारा पत्रकार ऐसी महिलाओं से मिला जो अपने छोटे-छोटे मासूम बच्चों के साथ कड़ी धूप में भीख मांगने के लिए जाया करती हैं। उनसे यह जब यह पूछा गया कि आखिर ऐसी क्या वजह है, जो उन्हें अपने छोटे बच्चे के साथ कड़ी धूप में भीख मांगने के लिए मजबूर करती है। उन्होंने अपनी पीढ़ा रखते हुए कहा कि हमें कोई शौक नहीं है, भीख मांगने का। हम भी दूसरी महिलाओं की तरह इज्जतदार कामकाज करने का प्रयास किए थे लेकिन इसका परिणाम कुछ इस तरह निकला। जब हम अपने गांव से शहर में रहने के लिए आए, तो हमें लगा कि जिस तरह हम अपने गांव में गरीबी से जूझ रहे थे उस तरह की परेशानी शहर आने के बाद नहीं होगी। लेकिन शहर आने के बाद और भी परेशानी बढ़ गई। जब हम अपनी परेशानियों से छुटकारा पाने के लिए दूसरे के घरों में काम की तलाश करने के लिए पहुंचे तो कोठी वालों ने अपने घर पर काम देने से इन्कार कर दिया। क्योंकि उनकी मांग थी कि अगर आपके पास कोई प्रमाण-पत्र होगा, तभी हम आपको अपने घर पर काम के लिए रख सकते हैं। लेकिन हमारे पास कोई प्रमाण पत्र नहीं है, इसलिए मजबूरन हमें यह काम करने को मजबूर होना पड़ा। हमारा आप सभी से यह निवेदन है कि जो बच्चे तथा महिलाएं आपको किसी स्थान पर भीख मांगते दिखते हैं, तो आप उनसे घृणा ना करें। उनकी परेशानियों को समझें। कोई भी अपने शौक के लिए भीख मांगता है, उनकी कोई ना कोई परेशानी ही रही होगी, तब ही भीख मांगने के लिए मजबूर हो रही होंगी। हम आप सभी से यह आशा करते हैं कि इस खबर के माध्यम से जो लोग भीख मांगने वाले व्यक्ति के खिलाफ ऊँट-पटांग सोचते या बोलते हैं, अब नहीं बोलेंगे और उन्हें घृणा की नजरों से नहीं देखेंगे और एक सम्मान के नजरिए से देखेंगे।

आग की आंच में तप रहा बचपन

बातूनी रिपोर्टर: साबिया, आकाश व रिपोर्टर: शम्भू, नोएडा

नोएडा के कई स्थान पर लगभग 15 से 17 साल के बच्चे भुट्टा भूनने का काम करते हैं लेकिन इन बच्चों को भट्टा भूनते समय क्या-क्या समस्याएं उत्पन्न

होती हैं, यह जानने के लिए पत्रकार ने इन भुट्टा भूनने वाले बच्चों से जाकर बातचीत की। बातचीत के दौरान बच्चों ने बताया कि उनके परिवार बहुत गरीब हैं। उनके माता-पिता भी काम करते हैं लेकिन फिर भी हमारा गुजारा नहीं हो पाता है; क्योंकि उनके माता-पिता जो काम करते हैं, उसमें उन्हें बहुत कम आमदनी मिलती है। इसलिए बच्चे भुट्टा भूनने का काम करते हैं। अपने परिवार के सदस्यों के साथ भुट्टा खरीदने के लिए मंडी भी जाते हैं और शाम चार बजे से लेकर रात को ग्यारह बजे तक भुट्टा भूनकर बेचने का काम करते हैं। 14 वर्षीय आकाश ने बताया कि जब हम भुट्टा भूनते हैं, तो परेशानी होती है। कोयले की आंच हमारे हाथ पर पड़ती है, उसकी तेज तपन से कभी-कभी हाथ भी जल जाते हैं। इसके बावजूद कोयले की आंच बढ़ाने के लिए हाथों से भुट्टा भूनते समय पंखा झलना पड़ता है, ताकि तेज आंच पर भुट्टा अच्छी तरह सिक जाए। जब इन बच्चों के आराम का समय होता है, उस समय इन्हें दर्द के मारे चैन नहीं मिलता है। हाथ-पैरों में बहुत दर्द और चुभन महसूस होती है। आकाश ने अपना दर्द बताते हुए कहा कि अब तो बारिश का मौसम चल रहा है, कभी भी बारिश आ जाती है, जिसकी वजह से हमारी दुकानदारी बहुत कम चलती है और अधिक दिन घर पर रखने पर भुट्टे खराब होने की संभावना रहती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

व्हाट्सएप आने पर स्कूल जाने वाले बच्चों पर पड़ा गहरा असर

बालकनामा ब्यूरो

जब हमारे देश में व्हाट्सएप का आविष्कार हुआ तब से हमारे देशवासी काफी प्रसन्न हैं। पहले हमें कोई भी संदेश किसी दूसरे स्थान, जैसे अपने रिश्तेदारों व दोस्तों के पास भेजने के लिए डाकघर के चक्कर काटते पड़ते थे लेकिन फिर भी हमारा संदेश रिश्तेदारों व दोस्तों तक एक दिन में पहुंचना बहुत मुश्किल हो जाता था। लेकिन जब 24 फनवरी 2009 में व्हाट्सएप का आविष्कार किया गया, तब से पूरे देशवासी अपने संदेश को मिनटों अपने दोस्त या परिवार के अन्य सदस्य तक पहुंचा देते हैं। डाकघर के चक्कर भी लगाना बहुत कम हो गया है। हम किसी प्रकार के अपने दफ्तर के दस्तावेज भी चंद मिनटों में व्हाट्सएप के जरिए

पहुंचा देते हैं। लेकिन आपको क्या पता हमारे समाज में कुछ इस तरह के भी लोग हैं, जो पूरे दिन अपने कामकाज छोड़कर व्हाट्सएप को गलत प्रकार से प्रयोग करते हैं। आईए हम इस विषय पर विस्तार से जानकारी देते हैं। सुनने में आया कि कुछ सरकारी स्कूल जहां ज्यादातर ऐसे बच्चे पढ़ते हैं जिनके माता-पिता काफी गरीब हैं और गरीब माता-पिता कठिन मुश्किलों का सामना करके अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाते हैं, ताकि जिस तरह यह गरीबी परिस्थिती से जूझ रहे हैं, उस तरह इनके बच्चे इस कठिनाई से ना जूझें। लेकिन इन लोगों का सपना टूटता हुआ नजर आ रहा है। सुनने में आया है कि कुछ अध्यापक बच्चों को शिक्षा देते समय भी व्हाट्सएप का उपयोग करते हैं। अध्यापक का ध्यान एक तरफ ब्लेक बोर्ड पर होता है और दूसरी तरफ मोबाईल फोन पर, जब बच्चे शिक्षा से संबंधित अध्यापक से कोई बातचीत करते हैं, तो अध्यापक का जवाब होता है कि अभी मैं व्यस्त हूं, बाद में बताते हैं। बच्चे ठीक से समझ नहीं पाते हैं। इस कारण जब बच्चे परीक्षा में फेल हो जाते है तो इनके माता-पिता बच्चों पर अत्याचार करते हैं और शिक्षा से दूर कर देते हैं। माता-पिता की सोच में बदलाव आने लगता है। माता-पिता मजबूरन अपने बच्चों को बालमजदूरी की ओर धकेलने लगते हैं। बच्चों ने अपने सुझाव रखते हुए कहा कि हम मानते हैं कि व्हाट्सएप अच्छी चीज है, इसे प्रयोग करना चाहिए लेकिन उचित समय पर। जब आप सभी कामों से मुक्त हों या कोई आपातकालीन काम आ गया हो तब इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन शिक्षा देते समय इस तरह का व्यवहार ना करें। आपके इस व्यवहार की वजह से हम बच्चों का भविष्य खराब हो रहा है। हम आप सभी से यही निवेदन करते हैं कि कृपया अध्यापक हम बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार ना करें। हमें विस्तार से समझाएं।

बीमारियों में जकड़े हुए बच्चे चाहते हैं

इस पीड़ा से आज़ादी

बातूनी रिपोर्टर: इक्करा व रिपोर्टर: पूनम, आगरा

हमारे पत्रकार के सूत्रों के अनुसार पता चला कि एक बस्ती में लगभग 20-25 बच्चे बीमार पड़ गए हैं। यह बात सुनकर हमारे पत्रकार चौंक गए। इस विषय पर छानबीन करने के लिए हमारे पत्रकार उस बस्ती में जा पहुंचे। उस बस्ती में पहुंचने के बाद पता चला कि वाकई में मासूम बच्चे इस परेशानी से जूझ रहे हैं। पत्रकार ने जब बस्ती में रहने वाले लोगों से बातचीत की तो लोगों ने पत्रकार को हो रही समस्याओं के बारे में विस्तार से बताया। लोगों ने बताया कि हमारी बस्ती में सभी झुग्गियां मिट्टी की बनी हुई हैं। जब काफी तेज बारिश आतह है तो हमारी झुग्गी टूटने लगती है, और हमें पूरी रात हो रही बारिश में जूझना पड़ता है; क्योंकि हमारी बस्ती के आस-पास बहुत गंदगी है जिसकी वजह से बस्ती में मच्छर पनप रहे हैं। हम बस्ती निवासी कई बार बस्ती की साफ-सफाई किए हैं लेकिन इस सफाई का कोई फायदा नहीं हुआ है। जब भी बारिश होती है तो सारी गंदगी हमारी बस्ती में आकर जमा हो जाती है। क्योंकि हमारी बस्ती के आस-पास एक नाला है, उस नाले में अनेक प्रकार का कूड़ा-कचरा जमा हुआ है, जब भी बारिश होती है, तो उस नाले में अधिक पानी भर जाता है। अधिक पानी जमऩे की वजह से नाले में भरी हुई सभी गंदगी हमारी बस्ती में आ जाती है। मजबूरन हमें उस गंदगी को साफ-सुथरा करना पड़ता है। दुख की बात यह है कि साफ-सुथरा करने के बाद भी बस्ती में कुछ दिन तक बदबू व मक्खियां और मच्छर भी पनप रहे हैं। बस्ती में रहने वाले बच्चे वायरल, मलेरिया, डेंगू जैसी बीमारियां के शिकार हो रहे हैं। बस्ती निवासी से बातचीत करने के बाद हमारे पत्रकार उन बच्चों से मिले, जो बीमार पडे. हुए हैं। उन बच्चों का कहना है कि हम

इस गंदगी के कारण ही बीमार पड़ गए हैं। हमारे माता-पिता हमारा इलाज कराने के लिए जैसे-तैसे करके पैसे जमा कर रहे हैं और हमारा इलाज करवा रहे हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि हमें इस परेशानी से जल्द-से- जल्द मुक्ति दिलाई जाए, नहीं तो आने वाले समय में हम बच्चों पर और भी कठिनाईयां बढ़ सकता हैं।

कृपया बिना वजह हॉर्न न बजाएं

रिपोर्टर: शम्भू, दक्षिण दिल्ली

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारी राजधानी दिल्ली में आयेदिन सड़क एवं कामकाजी बच्चे ट्रैफिक से गुजरते हैं। इन ट्रैफिक की वजह से सड़क एवं कामकाजी बच्चों की जिंदगी पर क्या प्रभाव पड़ता है? आईए सुनते हैं उनकी कहानी, उनकी जुबानी। 13 वर्षीय बालक, जो सराय काले खां पुल के पास तिरपाल का तंबू बनाकर अपने परिवार के साथ गुजारा करता है। बालक का कहना है कि जब हम रात को सो रहे होते हैं तो ट्रैफिक के तेज शोर की वजह से हमारे कानों में बहुत तेज दर्द होने लगता है। जब हम इस परेशानी से जूझकर वाहन के ड्राईवर से बात करते हैं कि आप इतनी तेज हॉर्न क्यों बजा रहे हैं? तो वह हमें ही मारने के लिए दौड़ते हैं। इसके साथ ही जो बच्चे रिंग रोड से होकर दूसरे के घरों में कूड़ा-कचरा उठाने के लिए जाते हैं, वह किन-किन कठिनाईयों से गुजरते हैं? आईए सुनते हैं, उनसे ही। 15 वर्षीय बालक का कहना है कि हम बच्चे रोज अपने-अपने माता-पिता तथा भईया, भाभी के साथ घरों में कूड़ा-कचरा उठाने के लिए जाते हैं, तो रिंग रोड से होकर गुजरना पड़ता है।

हम बच्चे भी इस ट्रैफिक का सामना करके उन घरों तक पहुंचते हैं, जहां से हम कूड़ा कचरा उठाते हैं। हमारा भी यही कहना है कि हॉर्न तेज बजाने की वजह से कानों में बहुत दर्द होने लगता है। काफी भीड़भाड़ होने की वजह से जिस ठेला गाड़ी पर हम कूड़ा-कचरा लादकर लाते हैं, वह ठेला गाड़ी भी हमारे माता-पिता से नहीं चलायी जाती है, और कभी-कभी गलती से किसी वाहन में ठोकर लग जाती है, तो वह वाहन ड्राईवर गाली-गलौज तथा मारने के लिए दौड़ते हैं। इसलिए हम बच्चे यही चाहते हैं कि जब भी आप सड़क पर वाहन चलाते हैं, कृपया आवश्यकता पड़ने पर ही हॉर्न बजाएं। क्योंकि आप तो वाहन के अंदर बैठे होते हैं, आपको हॉर्न की आवाज़ से कोई नुकसान नहीं होता है लेकिन कभी आपने यह सोचने की कोशिश की है कि जो बच्चे सड़क पर गुजर-बसर करते हैं और जो पब्लिक सड़क से आना-जाना करती है उनका इससे कितना और किस तरह का नुकसान हो रहा होगा।

लड़कियों का जीना हुआ दुश्वार

रिपोर्टर: दीपक

हमारे समाज में लड़कियां दिन पर दिन अपने आपको असुरिक्षत महसूस कर रही हैं। क्योंकि हमारे समाज में जागरूकता होते हुए भी लोगों ने अपनी आंखों पर पट्टी बांधी हुई है। यह समस्या दिन पर दिन कम होने की बाजय बढ़ती हुई नजर आ रही है। क्योंकि अक्सर यह देखने व सुनने को मिला कि जब लड़कियां सड़क पर रहती हैं और वह कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए जाती हैं, उन लड़कियों को लोग एक अलग ही नजरिए से देखते हैं। अगर यह लड़कियां अपने कामकाज के दौरान किसी मुसीबत में भी रहती हैं, तो आस-पास के कामकाज करने वाले लोग उनकी समस्या को देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। इसी तरह हमारे पत्रकार को भ्रमण के दौरान एक खबर मिली कि एक बस्ती ऐसी है जहां काफी सारे ऐसे लोग हैं, जो अपने कामकाज के लिए दूर-दूर तक जाते हैं। बेचारी लड़कियां जब स्कूल तथा कामकाज करने के लिए अपने घर से बाहर जा रही होती हैं, तो रास्ते में वह दुष्ट लड़के नशा करते रहते हैं और लड़कियों को आते जाते देखकर गलत-गलत बातें बोलते हैं, जो उन लड़कियों को बिल्कुल अच्छी नही लगती हैं। इतना ही नहीं यह दुष्ट लड़के लड़कियों को अपने झांसे में फंसाते हैं और अपनी मनमौजी हरकत करने की कोशिश करते हैं। लड़कियों का कहना है कि दुष्ट लड़के कहते हैं कि मैं तुम से प्यार करता हूं। अगर तुम मेरे से प्यार नहीं करोगी, तो मैं मर जाऊंगा। अगर लड़कियां इनकी बातों को नहीं सुनती हैं, तो यह दुष्ट लड़के लड़कियों के परिवार वालों को मारने के लिए धमकी देते हैं।

इस कष्ट से मजबूर लड़कियां कुछ नहीं कर पा रही हैं। लड़कियों का कहना है कि हम चाहते हैं कि हमें इस पीढ़ा से जल्द-से-जल्द मुक्ति दिलाएं, तभी हम सुरिक्षत महसूस कर सकते हैं।

सांपों के भय के साये में बच्चों की शौचालय की मांग

बातूनी रिपोर्टरः सोनू व रिपोर्टरः शम्भू, नोएडा

नोएडा के कुछ विशेष स्थानों का पत्रकार ने दौरा किया। इस दौरान पत्रकार ने जाना कि नोएडा में रहने वाले बच्चे तथा काम करने वाले बच्चे किस मुसीबत से जूझ रहे हैं। आईए इस विषय पर विस्तार से जानते हैं। इसे पढ़कर आप भी दंग रह जाएंगे। यह बात सरफाबाद व आम्रपाली की है। इन दोनों स्थानों पर लगभग सात सौ से भी अधिक संख्या में टीन की चददर की झुग्गी-झोपड़ी बनी हुई हैं। इन झुग्गियों के बच्चे अपने माता-पिता के साथ गुजर-बसर कर रहे हैं। जिन स्थानों पर इन्होंने झुग्गी झोपड़ी बनाई हुई हैं, वहां पहले कभी जंगल हुआ करता था। जंगल की साफ-सफाई करके झुग्गियां बनाई हैं, तब से लोग इन झुग्गियों में रहते आ रहे हैं। चैंकाने वाली बात यह है कि अभी भी इस स्थान पर जंगल है जितने स्थान में झुग्गियों के पीछे जंगल तथा खेत हैं। इस जंगल में भारी संख्या में जहरीले सांप पाए जाते हैं। 9 वर्षीय सोनू का कहना है कि हमारी झुग्गी के अंदर भी सांप आ जाते हैं। इन सांपों से हम बच्चों को बहुत भय लगता है। कहीं ऐसा ना हो कि वह सांप हम बच्चों पर भारी पड़ जाएं। दूसरी ओर सपना का कहना है कि हम सभी बच्चों की झुग्गी टीन की चद्दर की बनी हुई हैं। सांप को जैसे ही थोड़ी-बहुत जगह मिलती है, वह हमारी झुग्गियों के अंदर प्रवेश कर जाते हैं। इससे हम बच्चों को भय लगया है कि कहीं हमारे खाने-पीने के पदार्थ में सांप नहीं चले जाएं। क्योंकि हमारे माता-

पिता, जो खाने-पीने का पदार्थ बनाते हैं वह नीचे ही रखते हैं। 12 वर्षीय मुस्कान का कहना है कि हमारी झुग्गी में शौचालय की सुविधा भी नहीं है। इसलिए हम बच्चे व हमारी झुग्गियों के हर एक सदस्य शौच करने के लिए रात को इसी जंगल में जाते हैं। क्योंकि दिनभर लोग इधर-उधर घूमते रहते हैं। इसी समस्या से जूझते हुए रात को काफी अंधेरा होने के बाद भी शौच करने को हम लड़कियां तथा हमारी माताएं-बहनें निकलती हैं। इसलिए हम सभी को भय लगा रहता है कि कहीं शौच करते समय सांप हमें काट न ले। इसलिए हम लड़कियां चाहती हैं कि हमारी झुग्गियों के डिब्बे वाला अस्थाई शौचालय ही लगा दिया जाए, ताकि हम सभी बच्चों को इस समस्या से छुटकारा मिल सके।

माता-पिता जबरन कराते हैं बच्चों से काम

रिपोर्टरः दीपक

हमारे पत्रकार के दौरा करनं के दौरान सूचना मिला कि जब से सरकार ने यह घोषणा की है कि 14 वर्ष के बाद बच्चे अपने माता-पिता के साथ घरेलू कामकाज में हाथ बाटा सकते हैं, तब से 14 साल के हो जाने के बाद बच्चों पर आफत सी आ गयी है। बच्चों द्वारा सुनने में आया है कि बच्चे स्कूल से आते ही अपने माता-पिता के साथ कामकाज पर लग जाते हैं। देखा गया है कि पूर्वी दिल्ली के कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिनके माता-पिता कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए काफी दूर-दूर तक जाते हैं और जब कबाड़ा बीनकर थके थकाए वापस घर आते हैं तो वह कूडे कचड़े की छंटाई इन मासूम बच्चों से कराते हैं। इन मासूमों को यह काम करना बिल्कुल पसंद नहीं है। क्योंकि जैसे ही हम बच्चे अपने स्कूल से थके थकाए घर आते हैं, हमारे माता-पिता खाने-पीने के लिए भी नहीं पूछते हैं और अपने साथ काम पर बैठने के लिए बोलते हैं। स्कूल से थके थकाए घर आने पर हमें विश्राम करने का मन करता है और विश्राम करने के बाद दूसरे बच्चों की तरह खेलने को मन करता है लेकिन यह सब हमारे नसीब में कहां है। हम बच्चे स्कूल से लौटने के बाद अपने स्कूल का होमवर्क करने के बजाय कूड़े-कचडे.की छंटाई करते हैं और बिजली की वायर, जो उसी कूड़े कचडे.में से निकलती है जिससे हम ब्लेड से छीलकर तांबा व सिल्वर निकालते हैं। यह काम करते समय हम बच्चों को कभी-कभी अंगुलियां में भी कट लग जाते हैं। हम बच्चों का कहना है कि हमारे साथ इस तरह का व्यवहार हमारे माता-पिता न करें और सरकार से भी यही निवेदन है कि हमारी आयु के साथ खिलवाड़ न करें, क्योंकि आपकी एक गलती की वजह से हम बच्चों की जिंदगी वर्बाद हो रही है।

बच्चे चाहते हैं झुग्गियों में सुरक्षा

तभी हम बच्चे हो पांएगे सुरक्षित

बातूनी रिपोर्टरः प्रियंका व रिपोर्टरः पूनम, आगरा

पत्रकार के दौरे के बीच कई स्थानों से यह खबर सामने आयी है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों के माता-पिता कुछ ऐसे स्थानों पर बसते हैं, जहां बच्चों के लिए खेलने की कोई व्यस्था नहीं होती है। इनके माता-पिता ऐसे स्थानों पर इसलिए बसते है, क्योंकि इनके माता-पिता के पास उचित रोजगार नहीं होता है जिसकी वजह से यह असुरिक्षत स्थान को अपनाते हैं। अगर इनके माता-पिता को उचित वेतन-रोजगार मिले, तो यह जरूर एक अच्छे मकान में अपने बच्चे के साथ कुशलपूवक जिंदगी गुजारते। उचित रोजगार नहीं मिलने के कारण इनके माता-पिता रेलवे लाईन के इर्द-गिर्द अपनी झुग्गी बनाकर अपना गुजारा करते हैं लेकिन रेलवे लाईन के पास झुग्गी बनाकर कई कठिनाईयों का सामना करके रहते हैं। रेलवे लाईन के आस-पास ना तो खेलने का मैदान है, ना ही सही प्रकार रहने लायक घर। पत्रकार को दौरान पता चला कि झुग्गी के आस-पास कहीं खेलने की व्यस्था नहीं है, इसलिए मजबूरन बच्चे रेलवे लाईन के पास खेलते हैं। लेकिन रेलवे लाईन के पास खेलने में बच्चों को बहुत भय लगता है। आईए जानते है आखिर खेलते समय बच्चों को किन-किन समस्याओं से जूझना पड़ता है? पता चला कि जब बच्चे रेलवे लाईन के पास खेल रहे होते हैं और जब राजधानी जैसी सुपर फास्ट रेल गाड़ी तेज रफ्तार से निकलती है तो काफी तेज हवा छोड़ती है जिसकी वजह से बच्चे हवा के लपेट में भी आने का डर रहता है। इस संबंध में बच्चों का कहना है कि हमारी झुग्गियों की छत तिरपाल की बनी है। जब रेलगाड़ी तेज रफ्तार से निकलती है तो हमारी झुग्गियों के तिरपाल भी इधर से उधर हो जाते हैं, तो आप ही सोच सकते हैं कि यह स्थान हम बच्चों के लिए कितना सुरक्षित है। बच्चों का कहना है कि हमारे माता-पिता पूरे दिन झुग्गी के अंदर अपने कामकाज में व्यस्त रहते हैं। इस वजह से हम बच्चों पर ध्यान रखने वाला कोई नहीं है। हम बच्चे जब किसी मुसीबत में होते हैं तब हम अपने माता-पिता को आवाज लगाते हैं, तब भी हमारे माता-पिता जल्दी नहीं आते है। क्योंकि हमारे माता-पिता पीस रेट पर पायल तैयार करते हैं। अगर सही प्रकार से पायल तैयार नहीं किए तो उचित पैसे नहीं मिलेंगे। उचित पैसे का प्रयोग मैं इसलिए किया हूं क्योंकि एक दिन का एडवांस पैसे हमारे माता-पिता पहले ही ले लेते हैं। अगर जितना पैसे लिए हैं, उस पैसे के अनुसार पायल तैयार नहीं हुए, तो सारे पैसे वापिस करने की नौबत आ सकती है। इसलिए हम बच्चों पर हमारे माता-पिता कम ध्यान देते हैं। अपने कामकाज में व्यस्त रहते हैं। इसलिए हम बच्चे असुरक्षित महसूस करते हैं। हम बच्चों के खेलने के अधिकार का हनन हो रहा है। हम चाहते हैं कि हमें भी खेलने का अधिकार मिले और हम भी सुरक्षित अपनी बस्ती में खेल सकें। यह तब हो पाएगा जब हमारी झुग्गियों को सुरक्षित किया जाएगा। इसलिए हम चाहते हैं कि हमारी झुग्गियों को पूरी तरह से तार से घेरा लगा दिया जाए, ताकि हम बच्चे उस रेलवे लाईन की ओर खेलने के लिए नहीं जा सकें।

बच्चों की गुहार हमारी बस्ती के आस-पास हो स्कूल निर्माण

रिपोर्टरः दीपक

पूर्वी दिल्ली में भ्रमण के दौरान पता चला कि स्कूल दूर होने के कारण बच्चे बड़ी कठिनाईयों से जूझकर अपने स्कूल पहुंचते हैं। इस विषय पर जब हमारा पत्रकार स्कूल जाने वाले बच्चों से बातचीत किया तो पता चला कि भूतकाल में यह बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। माता-पिता के साथ अलग-अलग प्रकार के कार्य में उलझे हुए थे लेकिन सामाजिक संस्था कि सहयोग से इन बच्चों का स्कूल में दाखिला हुआ है। जब कार्यकर्ता द्वारा बच्चों का स्कूल में दाखिला कराया गया था, तब यह दूसरी-तीसरी में थे लेकिन अब यह बच्चे बड़े हो रहे हैं और छठी कक्षा में चले गए हैं। छठी कक्षा के स्कूल बहुत दूर हैं। पूर्वी दिल्ली में रहने वाले बच्चों का कहना है कि स्कूल जल्दी पहुंचने के लिए हम बच्चे रेलवे लाईन से होकर जाते हैं जिसकी वजह से हम बच्चों को बहुत भय लगा रहता है कि कहीं हमारे साथ कोई दूघर्टना नहीं हो जाए। क्योंकि इस स्थान पर रेलगाड़ी बहुत तेजी से निकलती है। स्कूल जाने वाले बच्चों का कहना है कि हम अगर रेलवे लाईन से होकर नहीं गुजरेंगे

तो हम समय पर स्कूल नहीं पहुंच पाएंगे। इसलिए हम रेलवे लाईन वाली खतरनाक रास्ते को अपनाते हैं। जैसे-तैसे करके अपने स्कूल पहुंचते हैं। लेकिन हम इस समस्या को ज्यादा दिन तक नहीं झेल सकते हैं। हम चाहते हैं कि हमारी बस्ती के आस-पास एक माध्यमिक विद्यालय बना दिया जाए, जो छठी कक्षा से लेकर बारहवीं तक हो; ताकि हम बच्चे कुशलपूर्वक शिक्षा प्राप्त कर सकें। अगर हमारी यह इच्छा पूरी नहीं हुई तो हमें भय है कि कहीं हमारे माता-पिता स्कूल जाने पर रोकटोक ना लगा दें और बालमजूरी में न धकेल दें। हमारी सरकार और प्रशासन से विनती है कि हमारी परेशानी को ध्यान में रखते हुए हमारे आवास के आसपास ही स्कूल की सुविधा उपलब्ध करवायें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

क्या आप करेंगे इन मासूमों का सहयोग ?

बातूनी रिपोर्टर: जहांगीर व रिपोर्टर: शम्भू, गुड़गांव

पत्रकार ने बच्चों के साथ एक मींटिंग का आयोजन किया। इस मींटिंग के दौरान बच्चों ने आस-पास हो रही समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। इस मींटिंग के दौरान बच्चों ने तरह-तरह की समस्याएं बतायीं। इनमें से एक महत्वपूर्ण समस्या सामने आयी कि कुछ माह पहले समाजिक संस्था के द्वारा कुछ बच्चों को बड़ी ही कठिनाईयों से गुजरकर स्कूल में दाखिला दिलाया था। लेकिन वर्तमान में बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं हैं। यह बात सुनते ही पत्रकार मींटिग के समापन होने के बाद उन बच्चों से मिलने पहुंचे। उन बच्चों से मिलने के बाद पता चला कि जो बड़े बच्चे हैं, वह रोजाना पैदल ही स्कूल चले जाते हैं लेकिन जो छोटे-छोटे बच्चे हैं, वह स्कूल जाना नहीं चाहते हैं; क्योंकि जिस रास्ते से यह बच्चे गुजरकर स्कूल पहुंचते हैं, उस पर रिंग रोड है। उस रिंग रोड से काफी तेज रफ्तार से गाड़ियां निकलती हैं। बच्चों के माता-पिता का भी यही कहना है कि हम अपने बच्चों को इस तरह स्कूल नहीं भेज सकते हैं। क्योंकि भगवान न करे कि कभी हमारे बच्चों के साथ किसी भी तरह की दुघर्टना हो गयी तो उनको कौन देखेगा? कुछ बच्चों के माता-पिता रिक्शा वालों को पैसे भी देने के लिए तैयार हैं, जो बच्चों को रोजना स्कूल ले जा सकें और ले आ सकें। लेकिन दुख की बात यह है कि इस बस्ती में एक भी ऑटो रिक्शा वाला इस कार्य को करने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। एक ऑटो चलाने वाले व्यक्ति से बातचीत की गयी, तो उन्होंने बताया कि मैं सुबह पांच बजे ही अपने कामकाज करने के लिए बाहर निकल जाता हूं। इस समस्या पर छोटे-छोटे मासूम बच्चों का कहना है कि हम पढ़ाई करना चाहते हैं। हमें पता है कि समाजिक संस्था से आए हुए भईया ने हम बच्चों के लिए कितनी कठिनाईयों का सामना करके हमें स्कूल में पहुंचाया है। इसलिए हम आपसे यह गुहार लगा रहे हैं कि कुछ बच्चे के माता-पिता ऑटो रिक्शा का किराया देने के लिए तैयार हैं और कुछ के नहीं। क्योंकि उनके पास इतना वेतन नहीं है, जो वह ऑटो रिक्शा वाले को दे सकें। इसलिए हम बच्चे आपलोगों से कहना चाहते हैं कि आप हमारी मदद करें, ताकि कोई ऑटो रिक्शा वाले भईया हम बच्चों को प्रतिदिन स्कूल छोड़ सकते हैं और तभी हम बच्चे अपने भविष्य में आगे बढ़ सकेंगे।

क्या आप करेंगे हमारी मदद ?

बालकनामा ब्यूरो

नशीले पदार्थ सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए अहम मुद्दा बन गया है। इन नशीले पदार्थों पर रोकटोक लगाने वाला आज तक कोई व्यक्ति सामने नहीं आया है, जिसकी वजह से सड़क एवं कामकाजी बच्चों को नशा मिलना बंद हो जाए। दिन पर दिन सड़क एवं कामकाजी बच्चे नशे की अंधेरी दुनियां की ओर बढ़ते जा रहे हैं। पत्रकार को ऐसी ही एक खबर मिली, जो दिल दहलाने वाली है। इसे हम आपके सामने रख रहे हैं। पता चला कि राशन की दुकानों पर भी नशीले पदार्थ पाए जाते हैं और राशन के दुकानदार चोरी छुपे नशीले पदार्थ बच्चों को सेवन कराते हैं जिसकी वजह से बड़ी संख्या में बच्चे नशा की ओर बढ़ते ही जा रहे हैं। जब पत्रकार ने बच्चों के माता-पिता से बातचीत की तो माता-पिता का कहना है कि आजकल हमारे बच्चे नशे की ओर बहुत ज्यादा बढ़ चुके हैं कि वह अपने आपको नशा करने से रोक ही नहीं पा रहे हैं। नशा पाने के लिए घरेलू सामान चोरी करके बेचने लगे हैं। माता-पिता का कहना है कि हम अपने गांव घर को छोड़कर शहर में कमाने खाने के लिए आये हैं, ताकि हम दो पैसे कमा सकें। लेकिन जिस तरह हमारे बच्चों का हाल है उस वजह से हम मजबूरन कुछ नहीं कर पा रहे हैं। हमारा यही कहना है कि जो भी दुकानदार बच्चों के नशे के साथ इस तरह व्यवहार करते हैं उनसे निवेदन है कि इस तरह का व्यवहार न करें; क्योंकि आपकी इस हरकत की वजह से हमारे बच्चों की जिंदगी खराब हो रही है। हम आशा करते हैं कि इस खबर को पढ़कर आप सभी लोगों में जरूर परिवर्तन आयेगा।

इस परेशानी से कैसे पाएं आजादी ?

रिपोर्टर: दीपक

हम सभी जानते हैं कि वातावरण के अनुसार ही बच्चों में ज्ञान की बढ़ोतरी होती है। हमारे पत्रकार को भ्रमण के दौरान एक पता चला कि एक बस्ती है जिसके नाम का जिक्र हम यहां नहीं कर रहे हैं। हमें उस बस्ती से खबर मिली है कि भूतकाल में एक रिक्शे वाला व्यक्ति था जो जुआं खेलता था और वह व्यक्ति अक्सर छोटे-छोटे मासूम बच्चों से नशा मंगवाने का कार्य करता था। जब यह मासूम बच्चे नशा लाने से इन्कार करते थे, तो वह दुष्ट व्यक्ति इन बच्चों पर अत्याचार करता था। जैसे कि उन बच्चों को मारना पीटना आदि, जिसके भय से यह मासूम बच्चे नशा लाने के लिए जाने लगे। दुख की बात यह कि वह दुष्ट व्यक्ति मासूम बच्चों को नशा करने के लिए मजबूर करता था लेकिन जब मासूम बच्चे नशा करने से इन्कार करते थे, तो वह उन बच्चों को जबरन नशा करवाता था, ताकि उन बच्चों को भी नशे की लत लग जाए और वह अपने इस कार्य में सफल भी हुआ। इसकी वजह से बच्चे उसके नशे कि चगुंल में फंसने लगे और जो लोग उन बच्चों समझाते थे वह बच्चे उनके भी खिलाफ हो गए। यहां तक कि वह अपने माता-पिता से सही प्रकार से बातचीत भी नहीं करते थे। जब हमारे पत्रकार माता-पिता से मिलने के लिए पहुंचे तो माता-पिता ने अपना दुख बयान करते हुए कहा कि हमारे बच्चे वर्तमान में नशे के चंगुल में फंस चुके हैं। अगर हम नशा करने के लिए मना करते हैं, तो हम से ही गाली गलौज से बात करते हैं और नशा करने के लिए पैसे मांगते रहते हैं। हमारी समझाने की कोशिश भी असफल हो जाती है। हमारे बच्चे हमसे समझने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। हमारा चाहते हैं कि कोई व्यक्ति हमारी व हमारे बच्चों की मदद करे ताकि हम इस परेशानी से मुक्त हो सकें।

झुग्गी मालिक के दुर्व्यवहार की वजह से करना पड़ता है बदबू का सामना

बातूनी रिपोर्टर: विशाखा व रिपोर्टर: शम्भू, नोएडा

नोएडा की एक बस्ती, जिसका नाम हम इस खबर में गोपनीय रख रहे हैं। हमें बातूनी रिपोर्टर के माध्यम से पता चला कि उस स्थान पर 800-900 तक झुग्गी-झोपड़ी हैं। इन झुग्गियों में से कुछ झुग्गी में शौचालय बने हुए हैं और कुछ झुग्गी में तो बिल्कुल भी नहीं हैं। जिन झुग्गी में शौचालय नहीं बने हुए हैं, उन परिवार वालों को तो आयेदिन कठिन परेशानियों से गुजरना ही पड़ता है, लेकिन जिनकी झुग्गियों में शौचालय बने हुए हैं वह तो और भी कठिनाईयों से जूझ रहे हैं सुनने में आया है कि दस झुग्गियों के सदस्य एक ही शौचालय का उपयोग करते हैं, तो जाहिर सी बात है कि जब इतने सदस्य एक ही शौचालय का उपयोग करेंगे तो शौचालय आवश्य जल्दी-जल्दी भरेंगे। बच्चों का कहना है कि जब शौचालय पूरी तरह से भर जाते हैं, तो हमें शौच करने में बहुत तकलीफ होती है। शौचालय में हम बच्चों से बैठा नहीं जाता है। जब हम यह शिकायत अपने माता-पिता से करते हैं तो हमारे माता-पिता हमारी झुग्गी मालिक से बात करते हैं लेकिन हमारा झुग्गी मालिक भी बहुत दुष्ट है, वह बोलते है कि जब शौचालय भर गया है, तो मैं क्यों साफ-सफाई करवाऊं। तुमलोग खुद साफ-सफाई करने वाले कार्मचारी को बुलाओ या फिर खुद साफ करो। मेरा जिम्मा नहीं है शौचालय को साफ कराना। लेकिन माता-पिता का कहना है कि झुग्गी मालिक ने जब झुग्गी किराए पर दी थी तो उस समय यह बोला था कि झुग्गी में कोई भी परेशानी होती है तो आपलोग हमसे आकर बोलना, मैं सही करवा दूंगा। लेकिन वर्तमान में शौचालय भर गया है तो हमारा झुग्गी मालिक अपने वादों से मुक्कर रहा है। बच्चों का कहना है कि जब से शौचालय भरना शूरू हुआ, तब से झुग्गी के अंदर काफी बदबू फैलने लगी है। इस बदबू की वजह से हम बच्चे खुले मैदान में शौच करने के लिए जाने लगे हैं लेकिन दुख की बात यह है कि लड़के तो कैसे भी करके खुले मैदान में शौच कर लेते हैं लेकिन हमारी माताएं व बहनें अभी भी उसी भरे हुए शौचालय में बदबू का सामना करते हुए शौच करते हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि हमें इस परेशानी से मुक्ति दिलाई जाए। अगर हमें इस समस्या का समाधान नहीं मिला तो हम बच्चों का इस बस्ती में रहना बहुत मुश्किल हो जायेगा।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098

Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

हमें भी चाहिए इस कष्टपूर्ण जीवन से आजादी

बातूनी रिपोर्टरः सोनू, रीया व रिपोर्टरः शम्भू, गुड़गांव

पश्चिम बंगाल व बिहार में रहने वाले कुछ परिवार अतिगरीबी से जूझ रहे हैं। इस गरीबी से आजादी पाने के लिए पश्चिम बंगाल व बिहार के परिवार नोएडा एवं गुड़गांव में आकर बसने लगे। लेकिन नोएडा व गुड़गांव आने के बाद भी इन्हें गरीबी के दलदल से छुटकारा नहीं मिल पा रहा है। पश्चिम बंगाल के ही एक व्यक्ति श्री गोपीनाथ जी का कहना है कि पश्चिम बंगाल से हमलोग काम की तलाश में गुड़गांव आए। गुड़गांव में मैंने इधर-उधर काम की तलाश की, लेकिन कहीं पर काम नहीं मिला। इसके चलते मजबूरन हमारी पत्नी को काम करने के लिए घर से बाहर जाना पड़ा। उनकी पत्नी का कहना था कि हमें भी काम करना पड़ रहा है। अगर हम महिलाएं काम नही करेंगी, तो हमारे परिवार के सभी सदस्यों को भूखा ही रहना पड़ेगा। इस स्थान पर हमलोगों ने झुग्गी किराए पर ले रखी है। झुग्गी मालिक को यदि पैसे समय पर नहीं पहुंचते हैं, तो वह क्रोधित होता है और झुग्गी खाली करने की धमकी देता है। इसलिए हम महिलाएं बड़े-बड़े घरों में झाड़ू पोंछा लगाने का कार्य करती हैं, तब जाकर हमारे परिवारों का गुजारा हो रहा है।

इन सभी के घर में एक दो छोटे बच्चे हैं जिनकी देखरेख इनके जो थोड़े बड़े बच्चे हैं जिनकी उम्र लगभग 12-13 साल होगी, वह करते हैं। जब पत्रकार इन 12-13 वर्षीय बच्चियों से मिला, तो बच्चियों ने बताया कि जब हमारे माता कोठी में काम करने के लिए चले जाते हैं, तो हमें ही अपने छोटे-छोटे भाई-बहनों का ध्यान रखना पड़ता है। अपने घर का सारा कामकाज करना पड़ता है। जैसे कि बर्तन धोना, घर की साफ-सफाई आदि इससे हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है। बच्चियों का कहना है कि जब हमारे छोटे भाई-बहन पोटी कर देते हैं, तो हमसे साफ नहीं की जाती है। क्योंकि हम खुद भी इतने छोटे हैं। हमारे माता सुबह आठ बजे काम के लिए निकल जाते हैं और शाम 6-7 बजे तक घर वापस लौटते हैं इस बीच हम अपने भाई-बहनों का कैसे ध्यान रखते हैं, यह हम ही जानते हैं। 10 साल की बालिका का कहना है कि हम इस वजह से खेलने भी नहीं जा पाते हैं। अपने ही आंगन में बंद रहना पड़ता है। कभी-कभी जब मेरे भाई-बहन रोने लगते हैं, तो उसे चुप कराने में बहुत परेशानी होती है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि हमारे पिता को एक ऐसे स्थान पर नौकरी मिल जाए, ताकि हम बच्चों को इस परेशानी से छुटकारा मिल सके।

आज भी हो रहा है लड़के व लड़कियों में भेदभाव

बातूनी रिपोर्टरः रखी व रिपोर्टरः दीपक

हमारे समाज में आज भी लड़कियों के साथ भेदभाव किया जाता है। भ्रमण के दौरान हमारे पत्रकार को पता चला कि कुछ माता पिता ऐसे हैं, जो लड़को को पूरे अधिकार दे रहे हैं कि तुम कहीं भी आ जा सकते हो और अपने मन के मुताबिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हो, लेकिन लड़कियों को इस तरह की छूट नहीं दी जा रही है। सुनने में आया कि लड़कियां सिर्फ पांचवी कक्षा तक ही स्कूल जाती हैं, उसके बाद इनके माता-पिता घर के कामकाज करने के लिए मजबूर करते हैं। उन लड़कियों का कहना है कि 12 साल के बाद उन्हें घर से बाहर निकलने नहीं दिया जाता है और उन्हें घर की चारदीवारी के बीच ही घुट-घुटकर रहना पड़ता है। माता-पिता की यही सोच है कि बेटी पढ़ाई लिखाई करके क्या करेगी और उसे तो एक दिन ससुराल ही जाना है। अगर यह अभी पढ़ाई-लिखाई में ध्यान देगी तो घर के कामकाज कैसे सीखेगी? अगर यह अभी घरेलू कामकाज नही सीखती है, तो इसके ससुराल वाले हमें ही ताना देंगे कि आपने अपनी बेटी को क्या सिखा कर हमारे घर भेजा है। इस विषय को लेकर लड़कियां बहुत चिंतित हैं। लड़कियों का कहना है कि आखिर हमारे साथ इस तरह का भेदभाव क्यों किया जाता है? आखिर क्यों हमें अपनी इच्छाओं को दफन करना पड़ता है? भयवश हम लड़कियां अपने माता-पिता से कुछ कह भी नहीं पातीं। हम लड़कियां चाहती हैं कि इन्हें भी अपने भाईयों की तरह स्नेह और व्यवहार मिले, ताकि यह लड़कियां भी अपने सपनों को साकार कर सकें।

क्या इन बच्चों का अरमान होगा पूरा?

रिपोर्टरः शम्भू

काफी समय से यह सुनने में बहुत आ रहा है कि कुछ पिता झुग्गी बस्ती में ऐसे हैं, जो शराब पीकर घर में रह रहे छोटे-छोटे बच्चों पर बहुत अत्याचार करते हैं। इस विषय को लेकर हमारे पत्रकार उनकी बस्ती में पहुंचे और खोज निकाला कि आखिर इन बच्चों के पिता इस तरह का अत्याचार क्यों कर रहे हैं। आईए हम इस विषय पर विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। पता लगा कि जिस स्थान पर यह लोग रह रहे हैं, उस स्थान का माहौल बहुत गंदा है। वहां पर काफी लोग झुग्गी के आस-पास शराब पीते रहते हैं, जिसकी वजह से उन बच्चों के पिता भी उस व्यक्ति के साथ बैठकर शराब पीना सीख गए हैं और अपने ही घर जाकर अपने बच्चों पर ही अत्याचार करते हैं। आईए ! बच्चों से सुनते हैं कि बच्चे किस तरह का अत्याचार सहते हैं। 15 वर्षीय बालिका अपनी पीढ़ा बताते हुए कहती है कि हमारे परिवार में कमाने वाला कोई नहीं है। मेरे पिता शराब के नशे में लिप्त रहते हैं और माता काम करने के लिए दूसरे के घरों में जाती है,

तब जाकर हमारे परिवार का गुजारा होता है। लेकिन दुख की बात यह है कि जब मेरी मम्मी घर पर नहीं रहती है, तो मेरे पिता शराब पीकर घर में बच्चों को मारते हैं, गंदी-गंदी गाली देते हैं, जो हमें बिल्कुल अच्छा नही लगता है। हम ने अपने पिता को काफी समझाने की कोशिश की, लेकिन मेरे पिता हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। इस परेशानी से जूझते हुए हमारी माताजी ने जब पिताजी को समझाने की कोशिश की तो माताजी को ही मारने लगे। इसलिए मेरी माताजी भी पिताजी से कुछ नहीं कह पाती हैं। हम चाहते हैं कि हमारी बस्ती में सुधार लाए जाएं। नशाबंदी पर सख्त कार्यवाही हो। बस्ती में शराब बेचने और पीने वालों को भी उचित दंड दिया जाए, तभी हम बच्चे सुरक्षित रह सकते हैं।

आखिर कब तक सहें हम इस पीड़ा को?

रिपोर्टरः पूनम आगरा

बालकनामा के पत्रकार ने अपने बातूनी रिपोर्टर्स के साथ एक बैठक की। इस बैठक के दौरान सभी बातूनी रिपोर्टर्स ने बस्ती में हो रही समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। चर्चा के दौरान एक विशेष बात सामने आई की जिस बस्ती में हमारे बातूनी रिपोर्टर व अन्य

सड़क एवं कामकाजी बच्चे रहते हैं, वह कई कठिनाईयों में जूझ रहे हैं। रिपोर्टरों ने विस्तार से चर्चा करते हुए कहा की हमारी बस्ती में सभी झुग्गियां कच्ची मिट्टी से बनी हुई हैं और झुग्गी में जमीन के अंदर से बिजली का वायर गया हुआ है। हम लोग इन झुग्गियों में किराये पर रह रहे हैं। जब कभी तेज बारिश आती है तो हमारी झुग्गियां टूटने लगती हैं व जमीन गीली होने की वजह से करंट आने लगता है जिससे बच्चों को भय लगा रहता है कि कहीं हम मासूम बच्चे इस करंट की लपेट में ना आ जाएं। क्योंकि माता-पिता तो पूरे दिन अपने कामकाज में व्यस्त रहते हैं। घर के छोटे छोटे मासूम बच्चे, जो अभी नादान हैं, उन्हें इन सभी चींजो के बारे में कोई अता पता नहीं है, उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। इस परेशानी से मुक्ति पाने के लिए हमारे माता-पिता जब हमारी झुग्गी मालिक से बातचीत करने पहुंचे तो हमारा झुग्गी मालिक इस बात पर कोई जबाव नहीं दिया। हम बच्चों की आपसे यही अपील है कि कृपया इस खबर के माध्यम से हम बच्चों की मदद कीजिए जिससे हम बच्चे इस पीढ़ा से मुक्ति पा सकें।

क्या आप इन बस्ती वालों को इन परेशानियों से मुक्ति दिला पायेंगे?

बातूनी रिपोर्टरः अमीत व रिपोर्टरः शम्भू, गुड़गांव

बातूनी रिपोर्टर के साथ पत्रकार ने एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक के दौरान सभी बातूनी रिपोर्टर ने अपनी-अपनी बस्ती में हो रही समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। बातचीत में गंभीर समस्या सामने आयी कि एक बस्ती जहां सभी परिवार किराए पर मकान ले रखे हैं। इनका इस स्थान पर आने का कारण है कि इनके गांव में कामकाज नहीं है। इसलिए यह लोग अपने परिवार के साथ इस स्थान पर गुजर-बसर कर रहे हैं। इस बस्ती में पीने के पानी की सप्लाई सही प्रकार नही हो रही है। पीने के पानी में शौच का पानी पाया गया। इस कारण बस्ती निवासी बहुत परेशान हैं। आखिर हम गंदा पानी कैसे पी सकते हैं। इस परेशानी से छुटकारा पाने के लिए माता-पिता ने मकान मालिक से इस परेशान के बारे में चर्चा की। उन्होंने भी इस समस्या का समाधान नहीं निकाला, और माता-पिता से बोला कि अगर तुमलोगों को इस स्थान पर कुछ ज्यादा ही तकलीफ हो रही है, तो तुम यहां से मकान खाली करके जा सकते हो। लेकिन इस पानी की समस्या को सुधार लाने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। मजबूरी में माता-पिता इसी स्थान पर रह रहे हैं; क्योंकि इनके पास इतना वेतन नहीं है कि यह लोग दूसरा मकान किराए पर ले सकें। माता-पिता तथा बच्चों का कहना है कि कभी जब ऐसा पानी आता है तो हमलोग बाहर से पानी खरीद कर लाते हैं। उस समय हमारे माता-पिता के पास पैसे नही होते हैं। हम बच्चे पानी की तलाश में पूरे दिन इधर-उधर घूमते रहते हैं। माता-पिता का कहना है कि हम चाहते हैं कि आपलोग हमारी मदद करें और हमें इस पीढ़ा से मुक्ति दिलाईये, तभी हम अपने परिवार के साथ खुश रह सकते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

परेशानियों से जूझता आस्था का परिवार

रिपोर्टर: दीपक

एक मां अपने बच्चों की जिंदगी तथा पहचान के लिए क्या कुछ नहीं कर जाती है। हर मां यही चाहती है कि उसके बच्चों को इस समाज में एक पहचान मिले और वह सुरक्षित रहें। मगर क्या यह हो पाता है ? आईए सुनते हैं 7 वर्षीय आस्था की कहानी उसकी ही जुबानी। आस्था अपने बारे में जिक्र करते हुई कहती है कि हमारा परिवार भूतकाल में बहुत कुशलपूर्वक रहता था। हमारे पिता अपने कामकाज के लिए बाहर जाते थे और शाम को घर लौटने के बाद हमारी मम्मी अच्छे-अच्छे पकवान बनाती थीं। हमलोग कुशलपूर्वक भोजन को खाते थे और सज-धज कर रहते थे। लेकिन आस्था को क्या पता था कि उसके हंसते-खेलते परिवार को दुखों का ग्रहण लगने वाला है। कुछ माह बाद आस्था के पिता बीमारियों के चंगुल में फंसने लगे। पैसे की कमी होने के कारण आस्था के पिता ने अपनी बीमारी का जिक्र किसी से नहीं किया। अन्त में मृत्यु को गले लगा लिया। जिसकी वजह से आस्था का परिवार कमजोर हो गया और आस्था की मम्मी ने निर्णय लिया कि मैं दूसरी शादी कर लेती हूं, तब मेरी आस्था को पिता का प्यार व एक नई पहचान भी मिल जाएगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। शादी के कुछ दिन बीत जाने के बाद आस्था के सौतेले पिता, आस्था पर अत्याचार करने लगे। आस्था की मम्मी के साथ मारपिटाई करने लगे, जिसकी वजह से आस्था की मम्मी दूसरों के घरो में कामकाज करने लगी, ताकि आस्था कुशलपूर्वक रह सके। कामकाज करने के बाद भी आस्था के सौतेले पिता आस्था पर अत्याचार करते ही रहे। आस्था इतनी छोटी बच्ची होने के बाद भी अपने घर का कामकाज करने में लगी रहती थी, तब भी उस पर अत्याचार ही होता था। इन सभी परेशानियों से जूझते हुए आस्था अपने घर से भाग गई। इसकी वजह से आस्था की मम्मी काफी परेशान हो गई थी। उन्होंने तुरन्त ही 1098 और 100 नम्बर पर कॉल कर दिया और आस्था को खोजने के लिए खुद भी निकल गई। काफी खोजबीन करने के बाद चाल्ईड हेल्प लाईन नम्बर के कार्यकर्ता इस कार्य में असक्षम रहे। लेकिन पुलिस ने आस्था को खोज निकाला। वर्तमान में आस्था अपने परिवार के साथ रहती है। लेकिन अभी भी आस्था के पिता में कोई बदलाब नही है और उसकी मां आज भी बहुत अफसोस करती है कि मैंने दूसरी शादी करके बड़ी भूल की है। इसी गलती की वजह से उसकी और उसकी बेटी की जिंदगी वर्बाद हो गई है।

राहुल की इस बहादुरी को सलाम

बातूनी रिपोर्टर: जावेद व रिपोर्टर: शम्भू, दक्षिणी दिल्ली

ना जाने, हमारे समाज के लोग स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को घृणा के नजरिए से क्यों देखते है व उनके बारे में ऊँट-पटांग क्यों बोलते हैं? क्यों हमारा समाज यह नहीं जानना चाहता है कि आखिर यह बच्चे स्टेशन पर ही क्यों रहते हैं? इनका घर होने के बावजूद भी स्टेशन को क्यों अपनाते हैं? आईए इस विषय पर हम विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। हम शुरूआत करते हैं 15 वर्षीय राहुल की कहानी से। राहुल ने किस प्रकार अपने घर को छोड़कर स्टेशन को चुना और दोस्तो के साथ नशे की अंधेरी दुनिया में लिप्त हो गया। भूतकाल में राहुल अपने माता-पिता के साथ वल्लमगढ़ में रहता था लेकिन माता-पिता के दुर्व्यवहार की वजह से राहुल को अपने घर में रहना अच्छा नहीं लगता है। इसलिए अपने दोस्तों के साथ रेलवे स्टेशन पर भागकर आ गया। स्टेशन पर आने के बाद दूसरे बच्चों की तरह रहने लगा। दूसरे बच्चे जिस तरह अपना पेट पालने के लिए कार्य करते हैं, उसी प्रकार राहुल भी रेलगाड़ी में से पानी की खाली बोतलें उठाने का कार्य करने लगा, और उन्हें बेचकर अपना गुजारा करने लगा। कुछ दिनों तक ऐसे ही चलता रहा। लेकिन कुछ दुष्ट व्यक्ति जो स्टेशन पर नशा करते हैं? वह जबरदस्ती राहुल को भी नशा की अंधेरी दुनिया में धकेल दियो। राहुल काफी नशा करने लगा। कुछ दिन बाद राहुल की मुलाकात एक ऐसे बच्चे से हुई, जो ''हमारी खुशियां सेंटर'' में पढ़ाई-लिखाई करने के लिए जाया करता है। वह अपने बारे में उसको बताया और उसे ''हमारी खुशियां सेंटर'' ले गया। वहां के कार्यकताओं ने उसे कुछ दिन तक समझाया कि नशा करना बहुत गलत बात है। आपकी आयु अभी पढ़ाई-लिखाई करने की है, नशा करने की नहीं। धीरे-धीरे राहुल में समझ बढ़ती गयी, और उसने कुछ ही दिनों में नशा करना कम कर दिया। समझ बढ़ने के बाद राहुल अपने माता-पिता से मिलने भी सप्ताह में एक बार जाने लगा। सप्ताह की कमाई भी अपने माता-पिता को देने लगा। अब वह काफी कुशलपूर्वक रह रहा है। लेकिन राहुल ने अपने दोस्तों के साथ ऐसा कार्य किया, जो एक हिम्मत वाला व्यक्ति ही कर सकता है। आईए जानते हैं कि राहुल ने कौन सा ऐसा हिम्मत वाला कार्य किया है? हमें पता चला कि 15 दिन पहले जब राहुल रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा चुन रहा था, तब एक 22 वर्षीय लड़का, जो रेलवे लाईन से होकर कहीं जा रहा था, हमारी छानबीन के दौरान पता चला कि वह लड़का अपने कानों से सुन व मुंह से बोलने में अक्षम था, जिसकी वजह से तेज रफ्तार से आ रही रेलगाड़ी की चपेट में आकर दुर्घटना का शिकार हो गया। दुर्घटना होने के बाद स्टेशन पर काफी पब्लिक इस घटना को देख रही थी लेकिन मदद मांगने पर भी कोई मदद नहीं किया, राहुल ने अपनी हिम्मत जुटाई, और खून से लथपथ होकर भी उस लड़के को अस्पताल पहुंचाया। स्टेशन पर कार्य कर रही पुलिस ने भी राहुल की इस बहादुरी की काफी तारीफ की। अन्य लोगों की तरह ही हम रेलवे स्टेशन व सड़क पर रहने वाले बच्चों में भी हमदर्दी की भावना मौजूद है। सेवा भाव मौजूद है। हम बच्चे भी अन्य बच्चों की तरह ही हैं। फर्क केवल इतना है कि हमारी परिस्थितियां इतनी ज्यादा विपरीत हैं कि हमें सड़क या रेलवे स्टेशन पर रहने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। इसलिए हम आप सभी आशा करते हैं कि कृपया स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को घृणा के नजरिया से ना देखें। उन्हें सिर्फ एक मौके की तलाश है। अगर आप उन्हें एक मौका देंगे, तो वह भी ऊंचाईयों को छू सकते हैं।

जब जिम्मेदार दोस्त हो ऐसा, तो किस बात का भय

बातूनी रिपोर्टर: धोनी व रिपोर्टर: शम्भू, पूर्वी दिल्ली

आईए सुनते हैं 10 वर्षीय धोनी और उनके दोस्तों की बहादूरी के किस्से। हमारे पत्रकार को पता चला कि वर्तमान में धोनी अपने परिवार के साथ पूर्वी दिल्ली की एक बस्ती में रहता है। भूतकाल में अपने गांव लखनऊ में रहता था। परिवार की गुजर-बसर नहीं हो रही थी इसलिए इनके माता-पिता पूरे परिवार सहित पूर्वी दिल्ली में आकर बस गए। वर्तमान में धोनी जिस स्थान पर रह रहा है वहां लगभग दो हजार से भी अधिक झुग्गी-झोपड़ी बनी हुई हैं। यह सभी झुग्गी-झोपड़ियां खतरे से खाली नहीं हैं। इस स्थान पर आयेदिन चोरी-चकारी होती रहती है लेकिन फिर भी इस बस्ती वालों को इन सभी परेशानी से कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। क्योंकि इस बस्ती में रहने वाले परिवारों का यह कहना है कि बस्ती को देखभाल करने के लिए धोनी और उसके दोस्त हैं। आईए अब हम जानते हैं कि धोनी के दोस्त कौन हैं? धोनी अपने दोस्तों के साथ इस बस्ती की रक्षा कैसे करते हैं? धोनी के दोस्त कुछ खास हैं। जिसकी कई वर्ष पहले पालतू जानवर में गिनती करते थे और उसे तंत्र खोज में उपयोग करते थे। अब हम उसका नाम आपके सामने रख रहे हैं वह है कुत्ता। वर्तमान में यह देखने को मिलता है कि सड़क के कुत्तों को देखकर लोग काफी डरते हैं। अगर वह किसी के घर में गलती से चले जाते हैं, तो उस पर अत्याचार करके भगा देते हैं लेकिन खुशी की बात है कि धोनी ने अपना मित्र इसी सड़क के कुत्ते को बनाया है। जब यह भूतकाल में अपने गांव लखनऊ से इस बस्ती में आया था, उसी समय दो कुत्तों को अपनी बस्ती में लेकर आया था और वर्तमान में उन्हीं कुत्तों की संख्या बढ़ी है और अब 5-6 हो गई है। यह 5-6 कुत्ते मिलकर

पूरी बस्ती की देखभाल करते हैं। धोनी अपने दोस्तों के बारे में जिक्र करते हुए कहता है कि जैसे कि हमारी बस्ती में कभी-कभी आधी रात को चोर आ जाते हैं, तो मेरे दोस्त पूरी बस्ती वालों को यह सूचना कर देते है कि बस्ती में कोई घटना घटने वाली है जिससे बस्ती वाले जागरूक हो जाएं और होने वाली घटना से मुकाबला कर सकें।

हमारा भविष्य आपके हाथों में

रिपोर्टर: दीपक

यह दर्दनाक खबर 10 वर्षीय एक बालक की है। इतनी छोटी सी उम्र में उसने अपनी जिंदगी का हमसफर नशे को बना लिया। यह बालक अपने परिवार के साथ कुशलपूर्वक रहता था लेकिन जब से इस बालक के पिता का देहांत हुआ, तब से कुछ इस तरह की उलझन में लिपट गया है कि इस बालक की माता रेलवे स्टेशन जैसे भीड़भाड़ वाले स्थानों पर रूमाल बेचने का कार्य करती है। उससे होने वाली आय से परिवार का गुजारा हो पता है। सुनने में आया कि यह बालक नशे के चक्कर में फंस गया है और अपने घर भी जाना पसंद नहीं करता है। नशा करने के लिए रेलवे स्टेशन जैसे अलग-अलग स्थानों पर कूड़ा-कबाड़ा चुनने के लिए जाता रहता है। जैसे कि पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन व आन्दन विहार। इन सभी स्टेशनों पर कूड़ा-कबाड़ा जमा करके इस जमे कूड़े को बेचकर भोजन खरीदने की बजाय नशा खरीदता है और नशा करके ही अपनी भूख को मिटाता है। जिस तरह हमारे मन में सवाल पनप रहे हैं, उसी तरह इस खबर को पढ़कर आपके मन

शेष पृष्ठ 8 पर

जल्द-से-जल्द हो इस समस्या का हल

बातूनी रिपोर्टर: लालचंद व रिपोर्टर: शम्भू, गुड़गांव

गुड़गांव की एक बस्ती जिसका नाम हम इस खबर में गुप्त रख रहे हैं। इस बस्ती के दौरे के दौरानहमारे पत्रकार को पता चला कि लोगों की जनसंख्या के अनुसार सही शौचालय बना हुआ है। लोग उस शौचालय का सही प्रयोग कर रहे थे लेकिन वर्तमान में पता चला कि करीब 45 दिन से भी ज्यादा दिन हो चुके हैं लेकिन उस शौचालय के अंदर पानी नहीं आ रहा है। इस कारण बस्ती निवासियों को शौच करने में बहुत परेशानी हो रही है। शौचालय में पानी ना आने की वजह से बस्ती निवासी शौच करने के लिए दर-दर भटक रहे हैं। जब यह उलझन पत्रकार को पता चली तो पत्रकार ने शौचालय के कार्यकर्ता से बातचीत की। जो शौचालय को साफ-सफाई व देखरेख करते हैं, उनसे बातचीत करने पर पता चला कि जिस पाईप लाईन से शौचालय में पानी आता था, उस पाईप लाईन का कनैक्शन कहीं पर टूट गया है। इस कारण शौचालय में पानी नहीं आ पा रहा है। कार्यकर्ता का यह भी कहना था कि हमने आगे बातचीत की है लेकिन वहां से भी कोई जबाव नहीं आया है। हम चाहकर भी बस्ती निवासियों को इस परेशानी से मुक्ति नहीं दिला पा रहे हैं। बच्चों से बातचीत करने पर पता चला कि शौच करने में अब बहुत परेशानी हो रही है। रात को खेत में शौच करने जाना पड़ता है। माता-पिता व लड़कियों का भी यही कहना था कि शौच करने में हमें बहुत कठिनाई हो रही है। हम चाहते हैं कि इस परेशानी को जल्द-से-जल्द निपटाया जाए, ताकि हम बस्ती निवासी कुशलपूर्वक शौचालय इस्तेमाल कर सकें।

काश! होते सभी लोग जागरूक, तभी बनता हमारा समाज स्वच्छ

बातूनी रिपोर्टरः धोनी व रिपोर्टरः शम्भू, पूर्वी दिल्ली

पूर्वी दिल्ली की कुछ बस्ती में यह देखने को मिला कि बस्ती वाले अपनी बस्ती के आस-पास ही कूड़ा-कचरा फैंकते हैं जिसकी वजह से इन बस्ती वालों को काफी परेशानी होती है। इन लोगों को कूड़ा-कचरा की बदबू इनके घर तक आती है और इनके बच्चे बीमारियों के शिकंजे में आ रहे हैं। माता-पिता को नहीं पता था कि बच्चे किस तरह इस बदबू का सामना करते हैं। वह तो अपने घरों का काम निपटाने के बाद अपने कामकाज के लिए बाहर निकल जाते हैं लेकिन इस परेशानी का सामना हम मासूम बच्चों को करना पड़ता है। इस बात की भनक नगर निगम को लगी और कुछ दिनों में ही नगर निगम के कार्यकर्ता इस बस्ती में विजिट करने के लिए पंहुचे। बस्ती का बुरा हाल देखकर नगर निगम के कार्यकर्ता भी चौंक गए। उन्होंने निर्णय लिया कि जल्द-से-जल्द इस बस्ती को साफ-सथुरा बनाना है और कुछ ही दिनों बाद एलान कर दिया कि अब बस्ती निवासी कोई भी इस बस्ती में कूड़ा कचरा नहीं फेंकेंगे। अगर कोई बस्ती निवासी इस तरह का बर्ताव करते हुए पकड़ा गया, तो उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। जल्द ही बस्ती में काम करना शूरू कर दिया। सबसे पहले आस-पास में जो छोटे-मोटे गड्ढे थे, जिनमें पानी जमा होने की संभावना थी उन गड्ढों को बंद किया गया, ताकि मच्छर नहीं पनप सकें और सभी बस्ती निवासी डेंगू, चिकंगुनिया जैसी बीमारियों से मुक्त हो सकें। वर्तमान में नगर निगम की मेहनत काफी रंग लायी है। जब से नगर निगम ने यह एलान किया है कि अगर कोई बस्ती निवासी अपना घरेलू कूड़ा-कचरा अपने घर के आस-पास फेंकेंगे, तो उनके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी, तब से बस्ती निवासी के अंदर डर बैठ गया है। इस डर की वजह से कोई भी बस्ती निवासी अपने घर के आस-पास कूड़ा कचरा नही फेंकते हैं। अब यह बस्ती स्वच्छ नजर आ रही है। वर्तमान में बस्ती वाले अपना घरेलू कूड़ा एकत्रित कर लेते हैं, फिर बैग में डालकर कूडे.को मैदान में कूड़े के ढ़ेर पर फेंकने के लिए जाते हैं। हमारी यही गुजारिश है कि हर एक बस्ती में इसी प्रकार से लोगों जागरूकता बढ़ायी जाए, ताकि हमारी बस्ती व हमारा समाज स्वच्छ बन सके।

हमारा भविष्य आपके हाथों में

पृष्ठ 7 का शेष

में भी तरह-तरह के सवाल पनप रहे होंगे कि आखिर 10 वर्षीय बालक इस नशे की ओर क्यों बढ़ा ? इसका सिर्फ एक ही जवाब है, हमारी नशाग्रस्त सामाजिक व्यवस्था। क्योंकि हमारे समाज में नशीले पदार्थ का व्यापार खुलेआम किया जाता है। इस समस्या पर रोकटोक लगाने वाला कोई नहीं। हमें इस नशाग्रस्त सामाजिक व्यवस्था को बदलना होगा और नशा मुक्त सामाजिक व्यवस्था कायम करनी होगी। समाज से नशे को जड़ से मिटाना होगा। इसके लिए सख्त से सख्त कानून लाने होंगे। जब बच्चों को नशा देते हुए दिख जाने पर उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाएगी तब ही हमारे देश के बच्चे नशे की इस अंधेरी दुनिया से मुक्त हो सकते हैं। आज हमने इस खबर के माध्यम से एक बच्चे का जिक्र किया है लेकिन हमारे समाज में कई ऐसे मासूम बच्चे हैं, जो आयेदिन इन परेशानियों से जूझते रहते हैं। अतः हमारा आप सभी से निवेदन है कि कृपया बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं करें। उन्हें नशीले पदार्थ देते समय एक बार तो जरूर सोचें कि आखिर यह बच्चे भी आपके बच्चों जैसे ही हैं। उन्हें अपने बच्चों के समान समझें और सभी बच्चों को नशा से मुक्त रखें। तब ही हमारे देश में बदलाव आएगा और हम बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो पायेगा।

क्या आप करेंगे रीया का सपना साकार?

बातूनी रिपोर्टरः हीना व रिपोर्टरः शम्भू, दक्षिण दिल्ली

12 वर्षीय रीया अपने परिवार के साथ सराय काले खां में रहती है। रीया इससे पहले अपने परिवार के साथ बिहार के एक छोटे से गांव मीरगंज में रहती थी लेकिन गांव में परिवार का गुजारा नहीं हो पता था। इसलिए रीया के पिता पूरे परिवार के साथ शहर आ गए और सराय काले खां में आकर बस गए। अपने परिवार की गुजर-बसर करने के लिए कामकाज करने लगे। लेकिन दुख की बात यह है कि रीया का जो सपना था वह शहर आने के बाद ही खत्म होता नजर आ रहा था। क्योंकि गांव में रीया छोटे मोटे कार्यक्रम में डान्स करती थी लेकिन शहर आने के बाद घर की चारदीवारियों में बंद रहती थी। रीया जिस स्थान पर रह रही है वहां बच्चों के लिए एक सेंटर चलाया जाता है, ''संपनों का आंगन''। जब रीया को उसकी सहेलियों के द्वारा सेंटर के बारे में पता चला कि वहां बच्चों को पढ़ाया लिखाया जाता है और नई-नई चींजें सीखने को मिलती हैं, तब यह सुनकर रीया अपने आप को रोक ही नहीं पाई और सपनों का आंगन सेंटर में दौड़ती हुई चली गई। दीदी-भईया से अपने परिवार की समस्याओं के साथ ही साथ उसने अपने सपने का भी जिक्र किया और बताया कि उसे डान्स करना बहुत पसंद है और बड़े होकर वह एक डान्सर बनना चाहती है। यह सब जानने के बाद सेंटर के कार्यकताओं ने उसका हौसला बढ़ाया। वर्तमान में रीया अपनी डान्स की कला अपने जैसे छोटे-छोटे बच्चों को सिखाती है, जो पुल के नीचे तथा सड़क पर रहते हैं। आज रीया ने काफी बच्चों के दिल में अपनी जगह बना ली है।

रीया का सपना है कि वह एक अच्छे नृत्य संस्थान में डान्स सीखे और आने वाले समय में सड़क एवं कामकाजी बच्चों का नाम रौशन करे। जब हमारे पत्रकार ने रीया से बातचीत की तो रीया ने बताया कि अक्सर लोग सड़क पर रहने वाले बच्चों को घृणा की नजरों से देखते हैं। इसलिए मैं अच्छा डान्सर बनना चाहती हू, ताकि मैं दिखा सकू कि हम बच्चे भी किसी से कम नहीं। हमें तलाश है सिर्फ एक मौके की। अगर हमें एक मौका मिल जाए तो हम बच्चे भी अपनी मंजिलों को छू सकते हैं और अपने सपनों को साकार कर सकते हैं।

बच्चों के इस सफर में क्या आप देंगे सहयोग ?

रिपोर्टरः शम्भू, गुड़गांव

विजिट के दौरान पत्रकार को दो बच्चे ऐसे मिले, जो काफी छोटे थे। वह सड़क पर कबाड़ा बीन रहे थे। जब पत्रकार उन दोनों बच्चों से बात करना चाहा तो वे भागने लगे। यह देखकर पत्रकार ने उन बच्चों को समझाया कि डरो मत। मैं आपके जैसे बच्चों के लिए काम करता हूं। यह सुनकर बच्चे रुक गये और अपने बारे में बताना शूरू कर दिया। पत्रकार उन बच्चों के साथ बैठकर बातचीत किया। बातों बात में पत्रकार ने उन दोनों बच्चों के बारे में जाना कि आखिर यह दोनों बच्चे कूड़ा-कबाड़ा क्यों चुनते हैं। कुछ देर बाद बातचीत करने के बाद बच्चों ने बताया कि हम अपनी मर्जी से कूड़ा-कबाड़ा नहीं बीनते हैं। हमारे माता-पिता जबरदस्ती कूड़ा-कबाड़ा बीनने के लिए भेजते हैं, तब मजबूरी में हम बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए आते हैं। पत्रकार ने उन दोनों बच्चों से पूछा कि आपके माता-पिता आपको कबाड़ा बीनने के लिए जबरदस्ती क्यों भेजते हैं ? बच्चों ने बताया कि हमारे घर में कमाने वाला कोई नहीं है। सिर्फ हमारी माता ही दूसरे के घरों में काम करने के लिए जाती हैं जिससे हमारे परिवार का गुजारा नहीं हो पाता है। इसलिए हमारी माता हमें कूड़ा-कबाड़ा बीनने के लिए मजबूर करती हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि हमारे पूरे दिन कड़ी मेहनत करने के बाद ही हमारे परिवार का मुश्किल से गुजारा होता है। लेकिन दुख की बात यह है कि कभी-कभी कुछ बड़े व्यक्ति हमारा चुना हुआ कूडा-कबाड़ा छीन लेते हैं और जब हम उनसे कुछ बोलते हैं कि आप हमारे साथ इस तरह का व्यवहार क्यों कर रहे हैं, तो वह हमें ही मारने के लिए दौड़ते हैं। वह हमारी पूरे दिन की मेहनत पानी में मिला देते हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि अभी हमारी उम्र पढ़ाई-लिखाई करने की है लेकिन घर की परिस्थिति खराब होने के कारण हम बच्चे पढ़ नही पा रहे हैं, अगर हमें कोई भईया-दीदी सहयोग करेंगे, तो हम अवश्य ही अपने जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने काम से आजादी पाने के बाद इंडिया गेट की सैर करते हुए जवानों की कुरबानी को याद किया

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने जाना स्वच्छ भारत अभियान के बारे में और सीखा अपनी बस्ती को स्वच्छ रखना

रैन बसेरे और झुग्गियों में रहनेवाले बच्चे अपनी पहचान पा कर खुश हुए

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471